R.P-18-19

Impact Factor-6.261

ISSN-2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

February-2019

SPECIAL ISSUE

इक्कीसवीं सदी का हिंदी साहित्य : संवेदना के स्वर

Guest Editor
Dr.Rameshwar Bangad
Dr.Archana Pardeshi
Prof.Amar Alde

Chief Editor
Dr.Dhanraj T.Dhangar
Assist.Prof.(Marathi)
MGV'S Arts & Commerce College, Yeola,
Dist.Nashik (M.S.)

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU, Dist. Parbhani

NUTAN MAHAVIDYALAYA SELU

Editorial Board

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi)
MGV'S Arts & Commerce College,
Yeola, Dist – Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editors :
Prof. Tejesh Beldar, Nashikroad (English)
Dr. Gajanan Wankhede, Kinwat (Hindi)
Mrs. Bharati Sonawane-Nile, Bhusawal
Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani)

Co-Editors -
Mr.Tufail Ahmed Shaikh- King Abdul Aziz City for Science & Technology, Riyadh, Saudi
- **Dr. Anil Dongre** - Head, Deptt. of Management, North Maharashtra University, Jalgaon
- **Dr. Shailendra Lende** - R.T.M. Nagpur University, Nagpur [M.S.] India
- **Dr. Dilip Pawar** - BoS Member (SPPU), Dept. of Marathi, KTHM College, Nashik.
- **Dr. R. R. Kazi** - North Maharashtra University, Jalgaon.
- **Dr.Gholap Bapu g** – Navgan College, Parli-Vaijnath, Dist.Beed (M.S.)
- **Prof. Sushant Naik** - Dept. of Konkani, Govt. College, Kepe, Goa, India
- **Dr. G. Haresh** - Associate Professor, CSIBER, Kolhapur [M.S.] India
- **Dr. Munaf Shaikh** - N. M. University, Jalgaon & Visiting Faculty M. J. C. Jalgaon
- **Dr. Samjay Kamble** -BoS Member Hindi (Ch.SU, Kolhapur), T.K. Kolekar College, Nesari
- **Prof. Vijay Shirsath** - Nanasaheb Y. N. Chavhan College, Chalisgaon [M.S.]
- **Dr. P. K. Shewale** - Vice Principal, Arts, Science, Commerce College, Harsul [M.S.]
- **Dr. Ganesh Patil** - M.V.P.'s, SSSM, ASC College, Saikheda, Dist. Nashik [M.S.]
- **Dr. Hitesh Brijwasi** - Librarian, K.A.K.P. Com. & Sci. College, Jalgaon [M.S.]
- **Dr. Sandip Mali** - Sant Muktabai Arts & Commerce College, Muktainagar
- **Prof. Dipak Patil** - S.S.V.P.S.'s Arts, Sci. and Com. College, Shindhkheda [M.S.]

Advisory Board -
- **Dr. Marianna kosic** - Scientific-Cultural Institute, Mandala, Trieste, Italy.
- **Dr. M.S. Pagare** - Director, School of Languages Studies, North Maharashtra University,
- **Dr. R. P. Singh** -HoD, English & European Languages, University of Lucknow [U.P.]
- **Dr. S. M. Tadkodkar** - Rtd. Professor & Head, Dept. of Marathi, Goa University, Goa,
- **Dr. Pruthwiraj Taur** - Chairman, BoS., Marathi, S.R.T. University, Nanded.
- **Dr. N. V. Jayaraman** - Director at SNS group of Technical Institutions,Coimbatore
- **Dr. Bajarang Korde** - Savitribai Phule Pune University Pune, [M.S.] India
- **Dr. Leena Pandhare** - Principal, NSPM's LBRD Arts & Commerce Mahila Mahavidyalaya,
- **Dr. B. V. Game** - Act. Principal, MGV's Arts and Commerce College, Yeola, Dist. Nashik.

Review Committee -
- **Dr. J. S. More** – BoS Member (SPPU), Dept. of Hindi, K.J.Somaiyya College,
- **Dr. S. B. Bhambar,** BoS Member Ch.SU, Kolhapur, T.K. Kolekar College, Nesari
- **Dr. Uttam V. Nile** - BoS Member (NMU, Jalgaon) P.S.G.V.P. Mandals ACS College,
- **Dr. K.T. Khairnar**– BoS Member (SPPU), Dept. of Commerce, L.V.H. College,
- **Dr. Vandana Chaudhari** KCE's College of Education, Jalgaon
- **Dr. Sayyed Zakir Ali** , HOD, Urdu & Arabic Languages, H. J. Thim College, Jalgaon
- **Dr. Sanjay Dhondare** – Dept. of Hindi, Abhay Womens College, Dhule
- **Dr. Amol Kategaonkar** – M.V.P.S.'s G.M.D. Arts, B.W. Commerce & Science College,

Published by –
© Mrs. Swati Dhanraj Sonawane,
Director, Swatidhan International Publication, Yeola, Nashik
Email : swatidhanrajs@gmail.com
Website : www.researchjourney.net Mobile : 9665398258

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU, Dist. Parbhani

SELU

INDEX

	Title of the Paper	Author's Name	page No.
1	इक्कीसवी सदी : हिन्दी साहित्य में महिला लघुकथाकारों	.....डॉ. रीमा राठौर	05
2	आदिवासियों के नरसंहार की अनकही गाथा.....	डॉ. माधव गुंडकर	09
3	इक्कीसवीं सदी में बदलते कविता के स्वर	– कृष्णा आचार्य	12
4	पाठ एक काव्यात्मक अभिव्यक्ति	– डॉ. ए. एस. सुमेप	14
5	21वीं सदी का हिन्दी साहित्य में संवदेना के पक्ष	–डॉ. कृष्णकांत मिश्र	17
6	इक्कीसवीं सदी की सफल एकांकी 'जान से प्यारे'	–डॉ.पजई भांकर रामभाऊ	20
7	हिंदी दलित आत्मकथाएँ : एक विव..	–डॉ. मुनेश्वर एस. एल.–पाटील राहुल	25
8	'मैं हिजड़ा... मैं लक्ष्मी आत्मकथा में अभिव्यक्त...	प्रा.नानासोब म. गोफणे	7
9	21 वीं सदी और सामाजिक सरोकार की	प्रा. डॉ. अर्चना पत्की	30
10	ेास कुजूर एवं निर्मला पुतुल की कविताओं में व्यक्त आदिवासी स्त्री की व्यथा–कथा.....	प्रा. तोंडाकुर लक्ष्मण	33
11	पंछि फिरि फिरि आवें जहाज पर*.....	डॉ. पी. के. कोपार्डे	35
12	रूढ़िवादी संवेदना की अभिव्यक्ति 'ऐ गंगा	....प्रा. डॉ. रेविता बलभीम कावळे	39
13	'गंगा सत्य 'नाटक में दलित चेतना का सत्य	डॉ. सुभाष राठोड	42
14	अल्मा कबूतरी में आदिवासी विमर्श.....	प्रा. सुषमा नागे	45
15	इक्कीसवीं सदी का गजल साहित्य	–स.प्रा.मुजावर एस.टी.	48

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU, Dist. Parbhani

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Special Issue -2- इक्कीसवीं सदी का हिंदी साहित्य : संवेदना के स्वर

ISSN : 2348-7143
February-2019

"21 वीं सदी और सामाजिक सरोकार की समन्वयवादी उपन्यासकार मधु कांकरिया"

प्रा. डॉ. अर्चना पत्की
हिंदी विभागाध्यक्ष,
नूतन महाविद्यालय, सेलू जि. परभणी

==

इक्कीसवीं सदी तक आते–आते महिला लेखन आज समृध्द होता नजर आता है। नारी जीवन के सभी सरोकारों को महिला लेखन परम्परा ने स्वानुभूति के आधार पर साहित्य लिखा है। जिसे आज नारी विमर्श के रूप में जाना जाता है, इसी परम्पराओं को चलानेवाली आधुनिक महिला साहित्यकारों में मन्नू भंडारी, मालती जोशी, ममता कालिया, शिवरानी, मेरून्निसा परवेज, मदूला गर्ग, कृष्णा सोबती, प्रभा खेतान, अलका सरावगी, चित्रा मुद्गल, सुशीला टाकभौरे आदि कईयों के साहित्य का केंद्र नारी विमर्श ही रहा है। लेकिन इस परम्परा को छेद देकर सामाजिक जीवन के सभी सरोकारों को यथार्थ रूप में नारी विमर्श के साथ ही सामाजिक जीवन के प्रश्नों पर अपना साहित्य केंद्रित करनेवाली इक्कीसवीं सदी की सामाजिक सरोकारों की समन्वयवादी रचनाकार के रूप में आज मधु कॉंकरिया का नाम लिया जाता है। उन्होंने साहित्य समाज में हिट होने के लिए नहीं लिखा, तो अपने सामाजिक दायित्व को निभाने के लिए साहित्य लिखा है। महिला लेखन किस प्रकार समृध्द हो सकता है? ऐसा प्रश्न पुछने पर मधु कॉंकरिया जवाब देती है कि, "सामाजिक सरोकारों से जुड़े बिना कोई भी लेखन समृध्द नहीं हो सकता। कोई भी लेखन अपनी पूर्णता तक या सार्थकता तक नहीं पहुँच सकता। मुझे उन नारीवादी लेखिकाओं से शिकायत है जो केवल पुरुष की नकारात्मक भूमिका को दिखलाती है। अरे भाई और भी गम है जमाने में इतनी भूखमरी है, इतनी बेकारी है, इतना भष्ट्राचार है, इतना आतंकवाद फैल रहा है। इन पर भी कुछ लिखो। गांवों में माओवाद फैल रहा है, वहाँ के जनजीवन की समस्याएँ हैं, ग्रामीण-जीवन की समस्याएँ हैं, आदिवासी जीवन की समस्याएँ है उनपर काम हो रहा है। आम आदमी के जीवन से जुड़कर ही साहित्य समृध्द हो सकता है।" मधु की इस साहित्यिक भूमिका से सिध्द होता है कि वे सामाजिक सरोकार को लेकर चलने वाली एक संवेदनशील लेखिका है। उनके साहित्य में नक्सली, नशापान, वेश्यावृत्ति, गरीबी, धर्म की अप्रासंगिकता, भ्रष्ट्राचार इन सामाजिक समस्याओं के साथ ही दलित, स्त्री, आदिवासी जैसे उपेक्षित सामाजिक वर्गों का भी यथार्थ अंकन मिलता है। यह अंकन उनके समय और समाज का आख्यान है, जो आज भी प्रासंगिक लगता है।

इक्कीसवीं सदी के उषा काल में मधु कांकरिया ने अपना और अपने समय का साहित्य लिखना आरंभ किया है। उन्होंने अब तक पॉंच उपन्यास प्रकाशित किए है। 'खुले गगन के लाल सितारे' (2000), 'पत्ताखोर (2005), 'सलाम आखिरी' (2007), 'सेज पर संस्कृत' (2008), 'चुभते चिनारे'(2016) आदि उपन्यास की गिनती इक्कीसवी सदी में होती है जो सामाजिक सरोकारों की भूमिकाएँ निभाते हुए नजर आते हैं।

उनका पहला उपन्यास 'खुले गगन के लाल सितारे' है, जो नक्सलवादी आंदोलन के दहला देनेवाले विवरण प्रस्तुत करता है। मूलतः ऐसे विषय इतिहास में नहीं लिखे जाते, लेकिन लेखिका ने यह प्रयास किया है। आजादी मिले 20 वर्ष हो चूके थे, लेकिन सामाजिक विषमता, आर्थिक विषमता रूकने का नाम नहीं ले रही थी। सत्तर के दशक में कलकत्ता के नक्सलवादी इलाकों में भूमिहिन किसानों और जमींदारों के बीच एक चिंगारी शोषण विहीन समतावादी समाज और मानवीय गरिमा को उपर उठाने के लिए यह आंदोलन चलाया गया था। मणि, इंदु, गोविंद और कुछ अन्य साहसी आत्माएँ अपने जीवन को नक्सलवादी आंदोलन से जुड़ा लेते हैं। आजादी से मोहभंग की स्थिति से यह आंदोलन शोषक–शोषित के बीच चलता रहा है। "भूमि उसकी हल जिसका, जोते जो उसी की तर्ज पर हुए भूमि दखल के पहले सशस्त्र आंदोलन में, जिसमें भूमिहीन किसानों में जमींदारों की भूमि दखल कर ली थी और एक सशस्त्र आंदोलन छिड गया था, शोषक–शोषितों के बीच।" इस आंदोलन में एक युवा पीढ़ी बरबाद हो गयी थी। लेखिका प्रस्तुत उपन्यास के माध्यम से बतलाना चाहती है कि सामाजिक मॉंगों को हिंसात्मक दृष्टि से नहीं मॉंगा जाता, तो सामाजिक समन्वयवादी दृष्टि से ही हर प्रश्नों के हल ढूढें जा सकते हैं। नक्सली आंदोलन

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU Dist. Parbhani

ISSN : 2348-7143
February-2019

शोषक–शोषित व्यवस्था को शुध्द बनाने के लिए हिंसात्मक मार्ग का उपयोग होने से केवल हिंसा ही मिली थी। इसलिए मधु ने हिंसा और अहिंसा के दोनों मार्ग में गौतम बुध्द के मध्य मार्ग के उपर वह सोचती है– "दोनों के मध्य गौतम बुध्द की तरह सोचती वह क्या कोई मध्यम प्रतिपद नहीं हो सकता? क्या दोनों ही अर्ध्दसत्य है– क्या एक का सत्य दूसरे से मिलकर कोई व्यापक सपूर्ण सत्य नहीं बन सकता?"[3] नक्सलवाद कार्ल मार्क्स के विचारों से प्रेरित है, जो विषमतावादी सामाजिक व्यवस्था को शुध्द करने का प्रयास करता है, तो गौतम बुध्द ने मानव के मन को शुध्द किया है। और सांस्कृतिक क्रांति के लिए मन का शुध्द होना जरूरी होता है, क्योंकि संस्कृति मन के साथ जुड़ी होती है। अंततः मधु ने हिंसात्मक नक्सली आंदोलन को सही मार्ग देने के लिए अप्रतिम सामाजिक समन्वयवादी गौतम बुध्द के विचारों का प्रर्याय बताया है।

मधु कॉकरिया का दूसरा उपन्यास 'सलाम आखिरी' है, जो वेश्या और वेश्यावृत्ति के पूरे परिदृश्य को देखते हुए हमारे भीतर वह असहाय स्त्रियों के प्रति करूणा का उद्रेक करने की कोशिश करता है, जो किसी भी कारण इस नरकीय व्यवसाय में आ फसी है। कलकत्ता के सोनागाछी रेड लाईट एरिया की अंधेरी गलियों से स्वयं गुजर कर मधु ने सभ्य समाज की संवेदनहीनता और कठोरता को भी साथ–साथ झिंझोड़ती चलती है और यही तथ्य लेखिका को सामाजिक सरोकारों को लेकर चलनेवाली लेखिका के रूप में पहचान देती है। कलकत्ता महानगर के विभिन्न लालवत्ती इलाके जैसे–सोनागाछी, बहुबाजार, कालीघाट, बैरकपुर, खिददिरपुर आदि में बसनेवाले वेश्या जीवन को लेखिका ने कुरूप से कुरूप एवं भयंकर से भयंकर नग्न रूपों का चित्रण किया है। यहाँ संस्कृति, मर्यादा, परंम्पराओं का कोई डर नहीं है, बंधन नहीं है। वेश्या, वेश्याओं के दलाल, वेश्याओं के चकले, चकले की मालकिन, पुलिस और वेश्याओं के ग्राहकों का चित्रण खुलकर यथार्थ हुआ। वेश्यावृत्ति सामाजिक जीवन के स्वास्थ्य को बरबाद कर देती है, इसलिए वेश्या उन्मुलन के लिए उपन्यास की नायिका सुकीर्ति और इंद्राणी दी कार्यरत है, जो पाठकों को भी ऐसा काम करने की प्रेरणा देती है। मधु वेश्याओं को श्रमिक के दर्जा के बजाय वेश्या उन्मूलन की बात करती है। उन्हें सभी मानवाधिकार एवं सम्मांन एक नागरिक की हैसियत से मिलने चाहिए और साथ ही सेंकेड जेनरेशन वेश्यावृत्ति पर रोक लगाने की अपिल भी करती हैं। वेश्या समस्या पर हिंदी साहित्य में कम से कम हिंदी साहित्य में पहली बार एक स्त्री की आँखों से देखा गया है।

मधु का तीसरा उपन्यास 'पत्ताखोर' है, जो नशाखोरी जैसी घातक सामाजिक समस्या पर प्रकाश डालता है। मानो यह उपन्यास नहीं तो नशाखोरी का पूरा समाजशास्त्र ही है। युवाओं में बढ़ती नशाखोरी वर्तमान युगीन समाज की चिंता का विषय है। माता–पिता के कलहपूर्ण दाम्पत्य जीवन से तंग आकर बच्चे किस प्रकार अकेले पड़कर नशा की ओर बढ़कर अपना जीवन बरबाद करते हैं, इसका वर्णन उपन्यास का नायक आदित्य द्वारा स्पष्ट किया है। इसके साथ ही अभिज्ञान, देवांशु आदि युवाओं को भविष्य भी नशाखोरी के कारण बरबाद होता देखकर लेखिका लिखती है– "युवाओं में बढती नशे और ड्रग्स की लत एक ऐसी ही बीमारी है। एक तरफ समाज की रंग–रग में तनाव, घुटन, कुंठा और असंतोष व्याप रहा है, युवाओं को हर तरफ अंधी और अवरूध्द गलियाँ नजर आ रही है, लगातार खुलते बाज़ार की चकाचौंध से मध्य और निम्नमध्यवर्ग का युवा स्तब्ध है। नतीजा भटकाव और विकृति।"[4] नशे के लिए व्यक्ति खुद जिम्मेदार है, नशे के व्यापारी जिम्मेदार है या हमारी सामाजिक–आर्थिक वास्तविकताएँ, कहना कठिन है। हमारे समय की सजग और सचेत लेखिका मधु कॉकरिया इस उपन्यास में युवाओं के पास नशा कहा से आता है? नशा कैसा किया जाता है? नशा का किस प्रकार व्यापार होता है? और नशा के धंदे को चलाने वालों के गॉडफादर कौन होते है? ऐसे कई सवालों से दो' चार होती है। और नशा से बचने के लिए युवाओं को गंभीर रूप में संदेश देकर अपना सामाजिक दायित्व भी निभाती है।

मधु कॉकरिया का चौथा उपन्यास 'सेज पर संस्कृत' है जो आर्थिक विपन्नता में जकड़ी ऐसी माँ का चित्रण है; जो अध्यात्म को मुक्तिमार्ग मान, यह चाहती है कि, उसकी जवान बेटियाँ भी उसी मार्ग को अपना ले, ताकि उनके जीवन को नया आयाम मिले। उसकी धारणा है कि किसी स्त्री के साध्वी बन जाने पर परिवार का मान–सम्मान अनायास बढ़ जाता है। आर्थिक विपन्नता दूर हो जाती है। छोटी बेटी तो माँ के पग–चिन्हों पर चल पड़ती है, लेकिन बड़ी बेटी शुरु से अंत तक धर्माडम्बरों का घोर विरोध करती है। मधु खुद मारवाडी समाज से होने के कारण उन्होंने जैन धर्म के धार्मिक आडम्बर, को नजदिक से देखा और इसलिए जैन धर्म के मूल सिध्दांत महावीर के मूल विचारों से किस प्रकार जैन धर्म के कथित साधु संतो ने उसमें अमानवीय विचारों की भरमार करके अपनी ओर से मिलावट की है। इसका पर्दा फाश लेखिका ने प्रस्तुत उपन्यास में किया है। जैन धर्म समाज में बुराईया फैलानेवाले लोगों को गेट पास मिलता है।

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU Dist. Parbhani

साथ ही किस प्रकार जैन धर्म इन्सानों में नहीं जीव–जंतुओं में दिलचस्पी रखता है, इसका भी विरोध करती हुई उपन्यास की नायिका संघमित्रा जैन धर्म के साधु महाराज से कहती है, "क्षमा चाहती हूँ महाराज.....पर यह आपकी दुनिया खद्दर के नीचे मुलायम सिल्क पहनने वालों की है। यह सेज पर संस्कृति बोलने वालों की दुनिया है। अहिंसा पूरित आपके धर्म में धोखाधड़ी, जमाखोरी, टैक्स चोरी, स्मगलिंग, बाल शोषण, स्त्री शोषण, श्रम शोषण जैसे जघन्य आर्थिक अपराधों को पाप समझा ही नहीं जाता और तो और नकली दवा बेचनेवालों और खाद्यान्नों में मिलावट करनेवालों के दुष्कर्मों को भी पाप घोषित नहीं किया जाता है। पाप के हाथियों को यहाँ खुला गेट पास दिया जाता है और लोगों को समझाया जाता है कि पाप है, हरी सब्जी खाने में अनछाना पानी पीने में, गाजर, मुली, आलु, प्याज खाने में। सुर्यास्त बाद खाने में....खुले मुँह से बोलने में, क्योंकि इससे जीवों की हत्या होती है। आपका धर्म इनसानों में नहीं जीव–जन्तुओं में ज्यादा दिलचस्पी रखता है। कीडों–मकोडो को ही समर्पित है यह मनुष्य के मनुष्यत्व में जो किडे लगे हैं उसकी आपको फिक्र नहीं है।"[5] ऐसे कई सवालों से लेखिका जैन धर्म के साधु संतो को हैरान करकर छोड़ती है। क्योंकि यह सवाल वैज्ञानिक और तकनीकी है। जिसके सवाल उन कथीत साधु–संतों के पास नहीं है, क्योंकि उन्होंने जैन धर्म की मूल सिध्दांतों को पीछे छोडकर मनुष्य के मनुष्यत्व को वे नष्ट करना चाहते हैं। इसलिए. लेखिका ऐसे पाखंण्डी अधर्म को नष्ट करके धर्म की नई परिभाषा करने की अपिल संघमित्रा के द्वारा करती है कि "दोष उन लोगों का है जिन्होंने धर्म पर अधर्म का मुखौटा चिपका दिया है। लोग धर्मात्मा है बिना यह जाने कि धर्म क्या है। धर्म की इन नई विषैली जंगली घासों को काटना होगा नई, नई परिभाषाएँ, नई व्याख्याएँ गढ़नी होगी।"[6] इस प्रकार लेखिका प्रस्तुत उपन्यास के द्वारा अधर्म और धर्म में वैज्ञानिक दृष्टि द्वारा सामाजिक समन्वय प्रस्तापित करना चाहती है, जो हर रचनाकार का परम कर्तव्य होता है। इसमें मधु सफल हुई है।

इस तरह मधु कॉकरिया ने अपने उपन्यासों में सामाजिक बुराइयों को वास्तव रूप में चित्रित करके उस बुराइयों को समाज से निकालने के लिए सामाजिक समन्वयवादी विचारों द्वारा कुछ सुझाव भी दीए है जो महत्वपूर्ण है। और मधु के लेखन से सिध्द होता है कि उनका साहित्य सामाजिक सरोकारों को लेकर चिंता व्यक्त करते हुए उनमें उचित समन्वयवादी मूल्यों को भी जोड़ देता हुआ दिखाई देता है। इसलिए इतने कम समय में लेखन करके इतनी बड़ी सामाजिक समन्वयवादी वैचारिकता को पानेवाली महिला लेखन परंपरा में मधु कॉकरिया का नाम आज इक्कीसवीं सदी में सम्मान से लिया जाता है। इनके संदर्भ में आलोचक वीरेंद्र यादव कहते हैं कि "अपने जीवन के चारों दशक सामान्य गृहिणी के रूप में बिताने के बाद अभी डेढ़ दशक पहले ही मधु कॉकरिया ने लेखन शुरू किया, लेकिन वह अपनी रचनाओं से 'लेट कमर' होते हुए भी महत्वपूर्ण लेखिका आती है, जो राजनीतिक सक्रियता, वैचारिक हस्तक्षेप और अन्य मसलों का क्षेत्र है। उसे ही उन्होंने लेखन में बुना। उन्होंने इस क्षेत्र की सबसे बड़ी समस्या नक्सलवाद को लेखन के लिए चूना। उन्होंने सामती पितृसत्तात्मक समाज और धर्म से नारी की मुक्ति को वैचारिक आधार दिया। उनका लेखन सिध्दांत से निस्सृत न होकर जीवन की व्यावहारिकता से उध्दत है।"[7] और यही व्यावहारिक सामाजिक सरोकारों को समझाकर सामाजिक समन्वय प्रस्तापित करने में लाभदायक साबित होती है।

अतः इक्कीसवीं सदी की जागरूक और सामाजिक संवेदनशील लेखिका मधु कॉकरिया के उपन्यास समाजिक सरोकारों के बीच सामाजिक समन्वय स्थापित करते हैं। यही बात मधु कॉकरिया को साहित्यकार की पहचान देती है।

संदर्भ :

1. सक्षात्कार, मधु कॉकरिया का रचना संसार–डॉ. उषा कीर्ति राणावत पृ. 203
2. खुले गगन के लाल सितारे – मधु कॉकरिया – पृ. 12
3. वहीं, पृ. 99
4. पत्ताखोर –मधु कॉकरिया – मल पृष्ठ से
5. सेज पर संस्कृत – मधु कॉकरिया –पृ. 120
6. वही, पृ. 136
7. Samalachn.blagsprt.in/2008/

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU, Dist. Parbhani